मर्यादाओं का उल्लंघन न करें

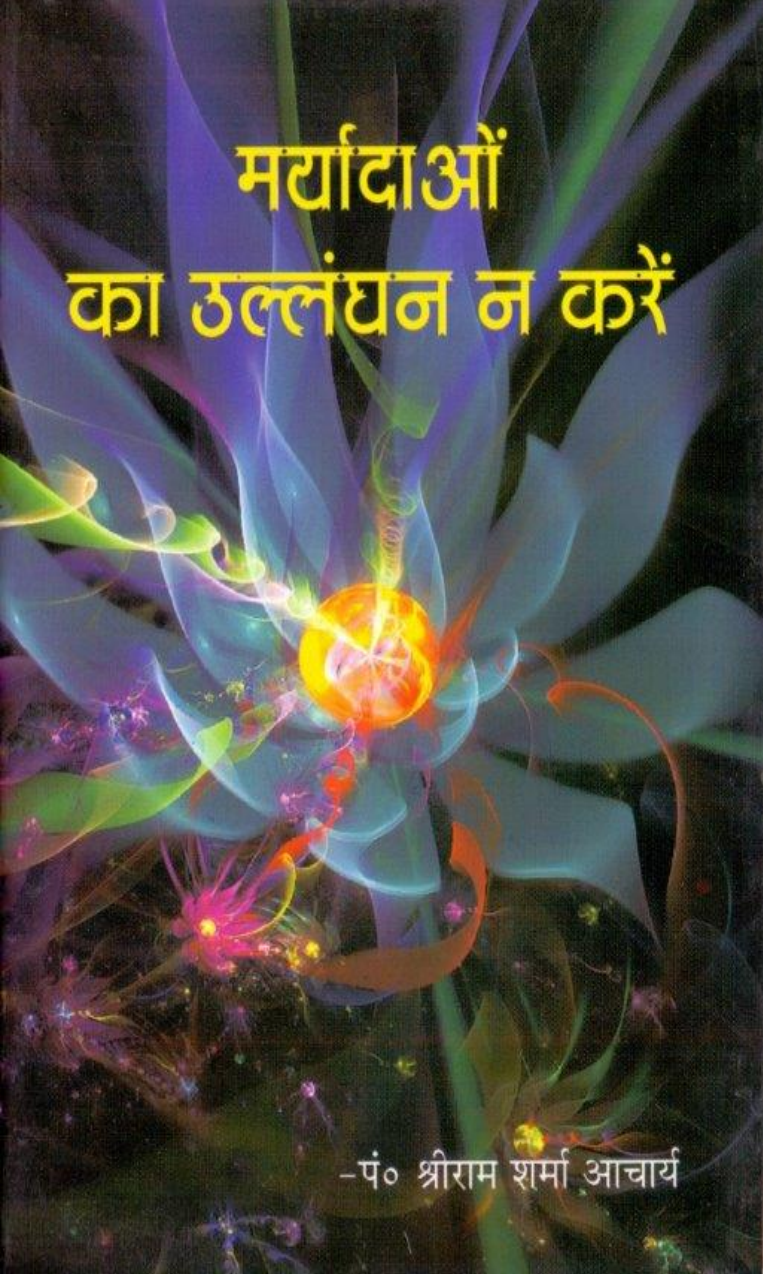

-पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

मर्यादाओं का उल्लंघन न करें

लेखक

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा—२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो० : ०९९२७०८६२८९, ०९९२७०८६२८७

फैक्स : २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१२

मूल्य : ६.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at

www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि
मथुरा (उ० प्र०)

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

पुनरावृत्ति सन् २०१२

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मर्यादाओं का उल्लंघन न करें

नैतिक नियम और उनकी अनिवार्य आवश्यकता

किसी भी मनुष्य अथवा समाज की उन्नति का लक्षण है— सुख, शांति और संपन्नता। ये तीनों बातें एकदूसरे पर उसी प्रकार निर्भर हैं जिस प्रकार किरणें सूर्य पर और सूर्य किरणों पर निर्भर है। जिस प्रकार किरणों के अभाव में सूर्य का अस्तित्व नहीं और सूर्य के अभाव में किरणों का अस्तित्व नहीं, उसी प्रकार बिना सुख-शांति के संपन्नता की संभावना नहीं और बिना संपन्नता के सुख-शांति का अभाव रहता है।

यदि गंभीर दृष्टि से देखा जाए तो पता चलेगा कि आरामदेह जीवन की सुविधाएँ सुख-शांति का कारण नहीं हैं बल्कि निर्विघ्न तथा निर्द्वंद जीवन प्रवाह की स्निग्ध गति ही सुख-शांति का हेतु है। जिसका जीवन एक स्निग्ध तथा स्वाभाविक गति से ही बहता चला जा रहा है, सुख-शांति उसी को प्राप्त होती है। इसके विपरीत जो अस्वाभाविक एवं उद्वेगपूर्ण जीवनयापन करता है, वह दुखी तथा अशांत रहता है। विविध प्रकार के कष्ट और क्लेश उसे घेरे रहते हैं। ऐसा व्यक्ति एक क्षण को भी सुख-चैन के लिए कलपता रहता है। कभी उसे शारीरिक व्याधियाँ त्रस्त करती हैं तो कभी वह मानसिक यातनाओं से पीड़ित होता है।

जो बेचैन है, अशांत है, पीड़ित है, वह संपन्नता उपार्जित करने के साधन जुटा ही नहीं सकता। उसे यातनाओं से संघर्ष करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से अवकाश ही नहीं मिलेगा। फिर भला वह संपन्नता का स्वप्न किस प्रकार पूर्ण कर सकता है ? जो शांत है, स्थिर है, निर्द्वंद्व है वही कुछ कर सकने में समर्थ हो सकता है। यदि परिस्थितिवश अथवा संयोगवश किसी को संपन्नता प्राप्त भी हो जाए तो अशांत एवं व्यग्र व्यक्ति के लिए उसका कोई उपयोग नहीं। जिस वस्तु का जीवन में कोई उपयोग नहीं, जो वस्तु किसी के काम नहीं आती उसका होना भी उसके लिए न होने के समान ही है। अस्तु, संपन्नता प्राप्त करने के लिए शांतिपूर्ण परिस्थितियों की आवश्यकता है और सुख-शांति के लिए संपन्नता की अपेक्षा है।

इस संपन्नता का अर्थ बहुत अधिक धन-दौलत से न होने पर भी आवश्यकताओं की सहज पूर्ति से तो है ही। जो नितांत निर्धन है, दरिद्र है वह सुख-शांति के लिए कितना ही मानसिक उद्योग क्यों न करे, उसे प्राप्त नहीं कर सकता। जब भूख लगेगी तब वह किसी साधन, समाधि अथवा भजन-पूजन से दूर न होगी। क्षुधित मनुष्य कब तक अपना मानसिक संतुलन बनाए रखेगा, कब तक उसका विवेक उसे विफल होने से बचा सकेगा ? एक सीमा के बाद प्रज्ञावान से प्रज्ञावान व्यक्ति भी विचलित हो उठेगा। उपयुक्त आवश्यकताओं की समुचित पूर्ति और मनुष्य का अपना संतोष दोनों मिलकर किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति के लिए संपन्नता ही है। जो निस्स्वार्थ, निर्लोभ, अलोलुप है वही वास्तव में संपन्न है। इसके विपरीत जो लालची है, अतिकामी है, लिप्सालु है, वह धनवान होने पर भी दरिद्र है, असंपन्न है।

उन्नत जीवन के लिए जिस सुख-शांति एवं संपन्नता की आवश्यकता है उसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य को प्राकृतिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुशासन में रहकर ही क्रियाशील होना पड़ेगा। मनुष्य जीवन की तुलना में यदि इस प्रकृति के जीवन, उसके अस्तित्व को देखें तो पता चलेगा कि जड़ होते हुए भी प्रकृति कितनी हरी-भरी और फल-फूलों से संपन्न है। किंतु मनुष्य सचेतन प्राणी होते हुए भी कितना दीन और दुखी है।

इसका मूल कारण प्रकृति का निश्चित नियमों के अंतर्गत अनुशासित होकर चलना है। समस्त नक्षत्र, तारे तथा ग्रह-उपग्रह एक सुनिश्चित अवस्था तथा विधान के अनुसार ही क्रियाशील रहते हैं। वे अपने निश्चित विधान का व्यतिक्रम नहीं करते। कोई लाख प्रयत्न क्यों न करे, कोई भी ग्रह अथवा उपग्रह अपने उदय, अस्त तथा परिभ्रमण की गतिविधि में कोई परिवर्तन न करेगा। लाख घड़ों से सींचने पर भी कोई पेड़-पौधा बिना ऋतु के फल-फूल उत्पन्न न करेगा।

जो विश्व-विधान समस्त सृष्टि पर लागू है, उसका एक अंश होने से वही विश्व-विधान मनुष्य पर भी लागू है। जिस प्रकार निश्चित नियम का उल्लंघन करते ही सितारे टूट पड़ते हैं, धरती हिल उठती है, उसी प्रकार अपने नैतिक नियमों का उल्लंघन करने पर मनुष्य का सारा जीवन ही अस्त-व्यस्त हो जाता है। शारीरिक स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है, मानसिक शांति समाप्त हो जाती है और आत्मा का अधःपतन हो जाता है। मनुष्य सुख-शांति का पात्र बनने के स्थान पर दुःख-दरद और कष्ट-क्लेशों का भंडार बन जाता है।

मनुष्य को सृष्टि एवं साधन के रूप में जो कुछ मिला है, वह समुचित उपयोग के लिए ही मिला है। वह सब इसलिए है कि इसकी सहायता से मनुष्य जीवन को अधिकाधिक समुन्नत तथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुंदर बनाए। सुख-शांतिपूर्वक अपनी पूरी आयु का उपयोग करे। मनुष्य जीवन अल्पायु अथवा अरूपता के लिए नहीं मिला है। वह अपने में सत्यं शिवं सुंदरम् की उपलब्धि करने के लिए ही प्राप्त हुआ है। नियामक ने मनुष्य को विवेक शक्ति देकर अवश्य ही यह अपेक्षा की होगी कि वह संसार का सबसे स्वस्थ, सुंदर और शक्ति-संपन्न प्रतीक बने। वह अपने कर्त्तव्य से संसार को सुंदरतम बनाए और निर्माता का सच्चा प्रतिनिधित्व करे। किंतु मनुष्य का स्वरूप तथा उसका कार्य-कलाप इस अपेक्षा से बिलकुल विपरीत दृष्टिगोचर होता है। यह दिन-दिन अस्वस्थ, असुंदर, अस्त-व्यस्त होता जा रहा है।

यह निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य जब तक नियति नियमों के अनुशासन में होकर नहीं चलेगा, तब तक दिन-दिन उसका पतन ही होता जाएगा। वह दिन-दिन और अधिक विपन्नतापूर्ण अशांति से घिरता जाएगा। वह यों ही रोएगा-चिल्लाएगा और पग-पग पर नारकीय यातना पाता हुआ कीड़े-मकोड़े की तरह मरता रहेगा।

जब सृष्टि के सारे साधन, सारे उपकरण और समस्त संपदाएँ सुख-साधन करने के लिए ही मिली हैं तो क्या कारण है कि उनके बीच रहते, उनका उपभोग करते हुए भी मनुष्य दीनता, दयनीयता और दुःख को प्राप्त होता जा रहा है। जो दूध, दही, घी, अन्न आदि पदार्थ मनुष्य को बच्चे से बड़ा कर जवान कर देते, स्वास्थ्य एवं सुंदरता प्रदान करते हैं, एक दिन मनुष्य उन्हीं का उपयोग करता-करता रोगी बन जाता है, क्षीण हो जाता है और सारी शक्ति खो देता है।

इसका कारण है—मनुष्य का असंयम एवं नियति नियमों के प्रति विद्रोह। जो विद्युत-शक्ति मनुष्य के बड़े-बड़े कार्य संपादित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करती है, वही बिजली अनियमपूर्वक छूने अथवा अनियमित रूप से उपयोग करने पर विनाश का कारण बन जाती है। जो अन्न मनुष्य को जीवन देता है, उसको प्राण कहा जाता है। उसका अनियमित उपयोग प्राणों का संकट बन जाता है।

नियति-नियमनों के अनुकूल चलने और नैसर्गिक अनुशासन मानने पर ही मनुष्य उन्नति एवं समृद्धि की दिशा में अग्रसर हो सकता है। इसके अतिरिक्त ऐसा कोई उपाय नहीं है जो मनुष्य को सुखी एवं शांत बना सके।

मनुष्य की केवल दो ही गतियाँ हैं। या तो वह ऊपर चढ़ेगा या नीचे गिरेगा। उसके लिए बीच का कोई मार्ग नहीं है। मनुष्य जीवन को यह छूट नहीं है कि वह कुछ अनुशासन में रहकर और कुछ अनुशासनहीन होकर बिना विशेष कष्ट-क्लेशों के चुपचाप मध्य मार्ग से निकल जाए। मनुष्य जीवन या तो उत्कृष्ट ही होगा अथवा निकृष्ट। जो उत्कृष्ट नहीं है, वह अवश्य ही निकृष्ट है। उत्कृष्टता और निकृष्टता के बीच उसकी कोई स्थिति नहीं है।

जब मनुष्य जीवन का उत्कृष्ट अथवा निकृष्ट ही होना निश्चित है तो उत्कृष्टता प्राप्त करने को बुद्धिमत्ता कहा जाएगा। ऐसा कौन अभागा होगा जो सहज-सुलभ उत्कृष्ट अथवा निकृष्ट जीवनों में से उत्कृष्ट जीवन को न चुने।

उत्कृष्ट जीवन प्राप्त करने के लिए मनुष्य को नियतिचक्र का अनुसरण और नैतिक नियमों का पालन करना ही होगा। इसके अतिरिक्त उसके सामने कोई उपाय नहीं है। मनुष्य को चाहिए कि वह शुभ संकल्पी, शुभदर्शी और शुभाचार वाला बने। अतिचार तथा अत्याचार को त्यागकर परोपकारी, परिश्रमी तथा पुरुषार्थी बने। जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आचरण शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक अथवा आध्यात्मिक हानि करे, उन्हें छोड़कर ऐसे आचार-विचार अपनाने चाहिए जिनसे इन चारों तथ्यों का विकास हो।

अनुशासन का उल्लंघन न करें

सूर्य, पृथ्वी, चंद्रमा एवं अन्य सभी ग्रह-उपग्रह एक ठीक-ठीक नियम, व्यवस्था और विधान के अनुसार काम करते हैं। पेड़ों का उगना, फलना-फूलना, ऋतुओं का परिवर्तन, जीवों का जन्म-मरण आदि भी एक विशेष नियम की प्रेरणा से नियत विधान के अनुसार होता है। संसार की प्रत्येक छोटी से लेकर बड़ी घटनाओं के पीछे एक नियामक विधान ही काम करता है। समस्त ब्रह्मांड का संचालन, नियमन करने वाला विधान ही पिंड में, अणु-अणु में काम करते देखा जा सकता है। प्रत्येक अणु अपने में गतिशील है, उसके भी चारों ओर कई परमाणु चक्कर लगाते हैं। मनुष्य का जीवन भी इस विश्व-नियम से अलग नहीं है वरन जीवन की प्रत्येक गतिविधि का नियमन भी इसी से होता है।

प्रसिद्ध दार्शनिक कांट ने लिखा है—"आकाश के नक्षत्रों से लेकर अणु-परमाणु के कार्य-कलाप और संसार की प्रत्येक घटना के पीछे, मनुष्य की प्रत्येक क्रिया के पीछे एक अमर चेतन सत्ता का नियमित विधान काम कर रहा है। जिस तरह किसी ग्रह के पथ-भ्रष्ट हो जाने पर सृष्टि में खलबली मच सकती है, उसी तरह विश्व-नियम, नियति के विधान के विरुद्ध चलने पर मनुष्य के आंतरिक जीवन में भयंकर संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। उसका परिणाम बाह्य जीवन में विनाश, हानि के रूप में ही प्राप्त होता है। विश्व-नियम, नियतिचक्र शांति और विकास का रास्ता है, जिसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुसार चलने पर मनुष्य के स्वास्थ्य, प्रतिभा का विकास होता है, जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त होती है।''

संसार में काम करने वाला नैतिक विधान एक विवेकपूर्ण तथ्य है जो विभिन्न शक्तियों, पदार्थों, क्रियाओं में संतुलन पैदा करता है। प्रत्येक क्रिया और उसकी प्रतिक्रिया विश्व-नियामक तथ्यों की प्रेरणा से ही होती है। मन के सूक्ष्म भाव, संकल्प-विकल्प, उतार-उढ़ाव, उनमें संतुलन-असंतुलन भी इसी विश्व-नियम की प्रतिक्रिया का अंग है।

एडिंगटन ने लिखा है—''जिस तरह मनुष्य के कार्य-कलापों के पीछे मन की शक्ति कार्य करती है, ठीक उसी तरह सृष्टि के मूल में भी एक चेतन सत्ता कार्य करती है, जो पूर्ण व्यवस्थित और नियामक है। पहले स्थूल दृष्टि से देखने पर जड़-जगत का कार्य भी एक मशीन की तरह दिखाई देता है किंतु गंभीर विचार, चिंतन द्वारा देखा जाए तो मालूम पड़ता है कि जगत और इसके प्रत्येक कार्य-कलाप के पीछे एक चेतन सत्ता काम कर रही है जो नियमपूर्वक है।'' भारतीय मनीषियों ने तो बहुत पहले ही इस तथ्य की अनुभूति प्राप्त कर ली थी। भारतीय दर्शन तो पग-पग पर इस विश्व-विधायक सत्ता को स्वीकार करके ही आगे बढ़ता है।

नियतिचक्र, विश्व-विधान, नैतिक विधान एक विवेकपूर्ण, व्यवस्थित, सुनियोजित तथ्य है, जिसका स्वभाव सत्यं शिवं सुंदरम् की रचना, सृजन करना है। यह इतना ही सत्य है जितना यह विश्व और मानव शरीर में काम करने वाली अमर चेतना। साथ ही वह उतना ही सूक्ष्म और दुरूह भी है। इसे जानना-समझना उसी तरह क्लिष्ट है जैसे शरीर में आत्मा को जानना। यही कारण है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिकांश लोग इसे समझ नहीं पाते। खासकर व्यक्ति अपने सीमित ज्ञान, तुच्छ दृष्टिकोण से इस असीमित, सर्वव्यापी तथ्य को बहुधा समझ नहीं पाते।

विश्व-विधान, नियतिचक्र की अनुभूति के लिए विवेकयुक्त, निरपेक्ष बुद्धि की आवश्यकता है। अविवेकी, अज्ञ मनुष्य अपने जीवन की समस्याओं का हल ही नहीं निकाल सकता, तो इस संसार के मूल नियम, मूल विधान को समझने की बात तो और भी दुरूह है। इस तरह के अज्ञानी जन जीवन की बाह्य घटना और उनके अच्छे-बुरे परिणामों से ही सुखी-दुखी होते रहते हैं। वे नहीं समझते कि उन्हें सुधारने के लिए ही दुःख एवं कष्ट दंड रूप में किसी नियति की प्रेरणा से मिलते हैं। इसी तरह अच्छे कार्यों का परिणाम सुख, शांति, प्रफुल्लता, उल्लास, वरदान के रूप में मिलता है।

गंभीर चिंतन के द्वारा मनुष्य विचार करे तो उसे भौतिक बाह्य जगत के प्रत्येक क्रिया-कलाप के अंतर्गत एक शक्ति काम करती हुई मालूम पड़ेगी। एक नियत विधान के अनुसार संसार के कार्यों का नियमन, संचालन होता दिखाई देगा। आग छूने पर जला देती है, पानी गीला कर देता है, विद्युत छूने पर प्राण हरण कर लेती है, बरफ ठंढी लगती है। कदाचित नक्षत्र टकरा जाएँ तो विश्व में खलबली मच जाए। इसी तरह कई नियम देखे जा सकते हैं। ये बाह्य जगत में काम करते हैं इसलिए उन्हें भौतिक नियम कहा जाएगा। सूक्ष्म जगत में काम करने वाले नैतिक नियम कहलाते हैं। प्रत्यक्ष रूप में इन्हीं इंद्रियों के संयोग से इनको नहीं जाना जा सकता, किंतु गंभीरतापूर्वक सूक्ष्म दृष्टि के साथ देखने पर इन्हें उसी तरह जाना जा सकता है जैसे किसी भौतिक नियम को।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नियतिचक्र की अनुकूल दशा में चलकर ही व्यक्ति और समाज की उन्नति-विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। इसके विपरीत चलना विश्वनियम का उल्लंघन करना, अपनी अवनति और पतन को निमंत्रण देना है। विद्युत का सदुपयोग करके उससे बड़े महत्त्वपूर्ण काम लिए जा सकते हैं। मशीनों, इंजिनों, पंखे, रेडियो तथा अन्य उपकरणों को गति मिलती है। सुंदर सुरुचिपूर्ण प्रकाश प्राप्त किया जाता है। सचमुच विद्युत ने संसार का नक्शा ही बदल दिया है। इसी बिजली को यदि गलत ढंग से छू लिया जाए तो यह प्राणघातक तक बन जाती है। आग का उपयोग मनुष्य की बहुत सी समस्याओं को हल कर देता है। अग्नि मनुष्य की जीवनदाता है, किंतु गलत ढंग से, नियम विरुद्ध होने पर यही प्राणलेवा बन जाती है। परमाणु शक्ति संसार के अभाव, गरीबी, अनेक समस्याओं का समाधान करने में समर्थ है, किंतु उसके गलत उपयोग से संसार का कुछ ही समय में नाश भी किया जा सकता है।

नियतिचक्र विश्व-विधान भी ठीक इसी तरह है। इसके अनुरूप चलने पर मनुष्य की उन्नति, विकास, समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है और इसके विरुद्ध चलने पर मनुष्य को असीम दुःख, परेशानी, विपरीतताओं का सामना करना पड़ता है। विश्व-नियम, नियतिचक्र किसी के सुख-दुःख का ध्यान नहीं रखता। वह एक नियम है जो सब पर लागू है। यह दुधारी तलवार है। सामने चलाकर जीवन-रण में विजय पाई जा सकती है और विपरीत दिशा में चलाकर अपना ही नाश किया जा सकता है। बुरे आचरण करना, बुरे कर्म करना, नियति के विरुद्ध चलना, अपने लिए बुरे परिणाम पैदा करना है। ऐसी स्थिति में सुखमय, शुभ, हितकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिणामों की आशा करना व्यर्थ है। बुराई का परिणाम कालांतर में बुरा ही होता है।

बबूल के बीज बोने पर काँटेदार वृक्ष का पैदा होना निश्चित है। किसी भी तरह का अनैतिक बुरा कार्य करने पर शारीरिक अवज्ञा, मानसिक रोग या किसी बाह्य दंड-विपत्ति का सामना करना पड़े तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। नियतिचक्र, नैतिक मर्यादाओं के विरुद्ध आचरण करने पर मनुष्य का मनोबल क्षीण हो जाता है। कई तरह के कुविचार, कुकल्पनाएँ उसके मन में घुस जाती हैं जिनसे बाह्य जीवन भी प्रभावित होता है और उसके फलस्वरूप कई दुष्परिणाम मिलते हैं। मानसिक द्वंद्वों में मनुष्य घुल-घुलकर विनाश को प्राप्त होने लगता है। अनैतिक आचरण से मनुष्य का विवेक, नैतिक बुद्धि प्रबल नहीं होती और उसे उचित-अनुचित का भी ध्यान नहीं रहता। फलस्वरूप गलत निर्णय होते हैं और इससे मनुष्य भयंकर दुःखद परिस्थितियों में पड़ जाता है।

इसका यह भी अर्थ नहीं कि विश्वनियामक विधान की मर्यादा तोड़ने वाले मनुष्यों से कोई दुश्मनी हो। यह सुधारात्मक संतुलन पैदा करने वाला तत्त्व है। जिस तरह किसी रोग के बाह्य लक्षण उस रोग को प्रकृति द्वारा शरीर से बाहर निकालने का प्रयत्न है, उसी तरह नियतिचक्र के विरुद्ध आचरण करने से मिलने वाला शारीरिक या मानसिक दंड अनैतिक कार्य करने वाले को उस ओर से विरत करने के लिए ही एक प्रयत्न है। अभिमानी, दुराचारी अपनी असहाय दीन अवस्था में अपने अनैतिक कार्यों के लिए बहुत पश्चात्ताप करते हैं। नियति की ठोकर खाकर ही मनुष्य को कुछ होश आता है और वह अपने दुष्कर्मों के बारे में समझने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगता है। भविष्य में ऐसा न करने का संकल्प भी करता है। खासकर परेशानी की स्थिति में तो वह दुष्कर्म नहीं ही करता। ऐसी स्थिति में कई सुधार भी किए जाते हैं, अनैतिक कार्य छोड़ देते हैं। विश्वनियामक सत्ता का अनुभव करने लगते हैं और उन्हें यह सोचने को बाध्य होना पड़ता है कि कोई सत्ता हमसे भी प्रबल है जो हमारे कर्मों का लेखा-जोखा लेती है। इतिहास साक्षी है कि जब नियति की ठोकर लगी, विश्व-विधान के अनुसार प्रतिक्रिया पैदा हुई, तो बड़े-बड़े महारथी, दिग्गज बलवानों को यह सोचने के लिए मजबूर होना पड़ा कि कोई हमसे भी शक्तिशाली सत्ता है जो हमारा लेखा-जोखा लेती है। उनका गर्व काफूर हो गया।

विश्वव्यापी नैतिक विधान एक अनिवार्य और अकाट्य नियम है जो संसार के समस्त कार्य-कलापों का नियमन-संचालन करता है। वह सर्वत्र व्याप्त एक नियम-व्यवस्था है। जड़-पदार्थ और अविकसित प्राणियों का तो यह प्रकृति के माध्यम से सीमा नियमन करता है। पशु-पक्षी प्रकृति की प्रेरणाओं से ही जीवन-व्यापार चलाते रहते हैं। मनुष्य का एक विकसित बुद्धि प्रधान प्राणी होने के नाते यह केवल नियमन करता है, संचालन नहीं। मनुष्य अच्छा-बुरा सब कुछ करने को स्वतंत्र है, किंतु इन सबका परिणाम नियतिचक्र के अनुसार ही मिलता है। ठीक इसी तरह समाज में अच्छे कार्यों के लिए मनुष्य पुरस्कृत और प्रशंसित होता है, तो बुरे कार्यों के लिए दंडित और उपेक्षित।

मनुष्य अपनी चालाकी, चतुराई, कूटनीति के द्वारा भौतिक जगत के सामाजिक-राजनैतिक दंड से बच सकता है, किंतु नियतिचक्र की निगाह से, विश्व-विधायक के दंड से वह नहीं बच सकता। यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दंड उसे भोगना ही पड़ता है। अनैतिक कार्यों के लिए अंतर्द्वंद्व, आत्म-भर्त्सना होने लगती है। समय पर उसका दुष्परिणाम तो मिलता ही है। असंयमी, दुराचारी, शरीर के साथ ज्यादती करने वाले इन कामों के लिए स्वतंत्र हैं। कितने नियति के दंडस्वरूप अस्वस्थता, रोग, दुर्बलता का दंड उन्हें भोगना ही पड़ता है। संसार की कोई शक्ति उन्हें इससे नहीं बचा सकती। अत्याचार, अनाचार, स्वेच्छाचार के परिणाम विनाश, असफलता, हानि के रूप में ही मिलते हैं तो अच्छे कार्य, सदाचार, पुण्य-परमार्थ कार्यों के परिणाम आत्म-संतोष, प्रसन्नता, शांति आदि वरदान के रूप में मिलते हैं। बुरे कार्यों के परिणाम बुरे, अच्छे कार्यों के परिणाम अच्छे रूप में ही मिलते हैं, यह एक निश्चित तथ्य है। दुनिया की खुली पुस्तक में यह सहज ही पढ़ा जा सकता है।

संसार का सबसे विकसित और उत्कृष्ट प्राणी होने के नाते मनुष्य को कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता है। वह कुछ भी कर सकता है। किंतु नैतिक तथ्य, नियतिचक्र और विश्व-नियम के विरुद्ध आचरण करने की छूट नहीं है। इस पर तो उसे दंड मिलना अवश्यंभावी ही है। वह इससे बच नहीं सकता। सत्य है।

कर्त्तव्य-धर्म की मर्यादा मत तोड़िए

परमात्मा ने मनुष्य को अन्य प्राणियों की अपेक्षा विशेष बुद्धि की शक्ति दी है। इस संसार में जितनी भी महत्त्वपूर्ण शक्तियाँ हैं उनमें बुद्धि शक्ति ही सर्वोपरि है। मानव-जाति की अब तक की इतनी उन्नति के पीछे उनकी बौद्धिक विशेषता का चमत्कार ही सन्निहित है।

इतनी बड़ी शक्ति देकर मनुष्य को परमात्मा ने कुछ उत्तरदायित्वों में भी बाँधा है ताकि दी हुई शक्ति का दुरुपयोग न हो। इन उत्तरदायित्वों का नाम है—कर्त्तव्य-धर्म।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रेलगाड़ी के इंजिन में विशेष शक्ति होती है, यह अपने मार्ग से भटक पड़े तो अनर्थ उत्पन्न कर सकता है। इसलिए जमीन पर दो पटरी बिछा दी गई हैं और इंजिन को उसी पर चलते रहने की व्यवस्था बनाई गई है। बिजली में बहुत शक्ति रहती है। वह शक्ति इधर-उधर न बिखर पड़े इसलिए उसका नियंत्रण रखना आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह प्रबंध किया गया है कि बिजली तार में हो होकर प्रवाहित हो और वह तार भी ऊपर से ढका रहे। नहर में पानी की तेज धारा बहती है। उस पानी को नियंत्रण में न रखा जाए तो उससे गाँव के गाँव डूब सकते हैं। इस खतरे की सुरक्षा के लिए नहर की दोनों पटरियाँ काफी चौड़ी और काफी मजबूत बनाई जाती हैं। हर शक्तिशाली तत्त्व पर नियंत्रण आवश्यक होता है। अनियंत्रित रहने देने पर तो शक्तिशाली वस्तुएँ अनर्थ ही पैदा कर सकती हैं। मनुष्य को यदि परमात्मा ने नियंत्रित न रखा होता, उस पर धर्म-कर्त्तव्यों का उत्तरदायित्त्व न रखा होता तो निश्चय ही मानव-प्राणी इस सृष्टि का सबसे भयंकर, सबसे अनर्थकारी प्राणी सिद्ध हुआ होता।

अशक्त या स्वल्प शक्ति वाले पदार्थ या जीव अनियंत्रित रह सकते हैं। क्योंकि उनके द्वारा बहुत थोड़ी हानि की संभावना रहती है। फिर जिनको वे हानि कर सकते हैं उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक शक्ति मिली होती है। इसलिए उस स्वच्छंदता में नियंत्रण और संतुलन का नियम काम करता रहता है। कीड़े-मकोड़े, मक्खी-मच्छर, कुत्ता-बिल्ली प्रभृति छोटे जीवों पर कोई बंधन नहीं रहते, पर बैल, घोड़ा, ऊँट, हाथी आदि बड़े जानवरों का रस्सी (नाथ), लगाम, नकेल, अंकुश आदि के आधार पर नियंत्रण रखा जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि यह प्रतिबंध न हो तो वह शक्तिशाली जानवर लाभकर सिद्ध होने की अपेक्षा हानि ही उत्पन्न करेंगे।

अनियंत्रित मनुष्य कितना घातक हो सकता है इसकी कल्पना मात्र से सिहरन होती है। जिन असुरों, दानवों, दस्युओं, दुरात्माओं के कुकृत्यों से मानव सभ्यता कलंकित होती है। वे शक्ल-सूरत से तो मनुष्य ही थे पर उन्होंने स्वेच्छाचार अपनाया, मर्यादाओं को तोड़ा, न धर्म का विचार किया और न कर्त्तव्य का। शक्तियों के मद में जो कुछ उन्हें सूझा, जिसमें लाभ दीखा वही करते रहे। फलस्वरूप उनका जीवन सब प्रकार घृणित और निकृष्ट बना। उनके द्वारा असंख्यों का उत्पीड़न हुआ और समाज की शांति व्यवस्था में भारी व्यवधान उत्पन्न होता रहा। असुरता का अर्थ ही उच्छृंखलता है।

मर्यादाओं का उल्लंघन करने की घटनाएँ दुर्घटनाएँ कहलाती हैं और उनके फलस्वरूप सर्वत्र विक्षोभ ही उत्पन्न होता है। सूर्य, चंद्रमा, ग्रह, नक्षत्र, पृथ्वी सभी अपनी नियत कक्षा और धुरी पर घूमते हैं, एकदूसरे के साथ आकर्षण शक्ति से बँधे रहते हैं और एक नियत व्यवस्था के अनुरूप अपना कार्यक्रम जारी रखते हैं। यदि वे नियत नियंत्रण को तोड़कर स्वेच्छाचार बरतने की चेष्टा करें तो उसका परिणाम प्रलय ही हो सकता है। यह ग्रह मार्ग में भटक जाएँगे और एकदूसरे से टकराकर विनाश की प्रक्रिया उत्पन्न कर देंगे। मनुष्य भी जब अपने कर्त्तव्य-मार्ग से भटकता है तो अपना ही नहीं दूसरे अनेकों का भी नाश कर सकता है।

परमात्मा ने हर मनुष्य की अंतरात्मा में एक मार्गदर्शक चेतना की प्रतिष्ठा की है जो उसे उचित कर्म करने की प्रेरणा एवं अनुचित करने पर भर्त्सना करती रहती है। कर्त्तव्यपालन के कार्य धर्म या पुण्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहलाते हैं। उनके करते ही तत्क्षण करने वाले को प्रसन्नता एवं शांति का अनुभव होता है। इसके विपरीत यदि स्वेच्छाचार बरता गया है, धर्म-मर्यादाओं को तोड़ा गया है, स्वार्थ के लिए अनीति का आचरण किया है तो अंतरात्मा में लज्जा, संकोच, पश्चात्ताप, भय और ग्लानि का भाव उत्पन्न होगा। भीतर ही भीतर अशांति रहेगी और ऐसा लगेगा मानो अपनी अंतरात्मा ही अपने को धिक्कार रही है। इस आत्म-प्रतारणा की पीड़ा को भुलाने के लिए अपराधी प्रवृत्ति के लोग नशेबाजी का सहारा लेते हैं। फिर भी चैन कहाँ? पाप-वृत्तियाँ जलती हुई अग्नि की तरह हैं। जो पहले ही जलन पैदा किया करती है। जहाँ उसे स्थान मिलता है।

शरीर में क्षय, उपदंश, दमा, गठिया, कुष्ठ, लकवा आदि रोग हो जाने पर स्वास्थ्य नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। अशांति और बेचैनी बनी रहती है। रुग्ण शरीर को लेकर मनुष्य कुछ नहीं कर पाता। घर वाले परेशान होते हैं, आर्थिक स्थिति बिगड़ती है और यदि रोग की स्थिति सुधरे नहीं तो जीवन भार रूप हो जाता है। शरीर की तरह ही मन में भी कई रोग उत्पन्न होते हैं और वे सारे मानसिक संस्थान की स्वस्थता को नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं। आत्म-प्रतारणा सबसे बड़ी मानसिक व्याधि है। जिसका मन अपने दुष्कर्मों के लिए अपने आप को धिक्कारता रहेगा, वह कभी भी आंतरिक दृष्टि से सशक्त न रह सकेगा। उसे अनेक मानसिक दोष-दुर्गुण घेरेंगे और धीरे-धीरे अनेक मनोविकारों से ग्रस्त होता जाएगा।

अनिद्रा, दु:स्वप्न, चिड़चिड़ापन, आवेश, उत्तेजना, क्रोध, चिंता, भय, ईर्ष्या, आशंका, संशय, अविश्वास, आलस, निराशा आदि कितने ही मानसिक रोग आत्म-प्रतारणा की व्यथा से पीड़ित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य को लग जाते हैं। पाप कर्मों के लिए अपना अंतरात्मा धिक्कारता और प्रताड़ित करता रहता है। वह मनुष्य सोते-जागते कभी चैन नहीं पा सकता। दया और दरद के रोग की भाँति पापी को भी न रात में और न दिन में, कभी चैन नहीं मिलता है। भीतर ही भीतर अपने आप ही अपनी शांति को कुतरता रहता है।

मर्यादाओं का उल्लंघन करके लोग तात्कालिक थोड़ा लाभ उठाते देखे जाते हैं। दूरगामी परिणामों को न सोचकर लोग तुरंत लाभ को देखते हैं। बेईमानी से धन कमाने, दंभ से अहंकार बढ़ाने और अनुपयुक्त भोगों के भोगने से जो क्षणिक सुख मिलता है वह परिणाम में भारी विपत्ति बनकर सामने आता है। मानसिक स्वास्थ्य को नष्ट कर डालने और आध्यात्मिक महत्ता एवं विशेषताओं को समाप्त करने में सबसे बड़ा कारण आत्म-प्रतारणा है। ओले पड़ने से जिस प्रकार खेती की फसल नष्ट हो जाती है उसी प्रकार आत्म-प्रतारणा की चोटें पड़ते रहने से मन और अंत:करण के सभी श्रेष्ठ तत्त्व नष्ट हो जाते हैं और ऐसा मनुष्य प्रेत-पिशाचों जैसी श्मशान मनोभूमि लेकर निरंतर विक्षुब्ध विचरता रहता है।

धर्म-कर्त्तव्यों की मर्यादा को तोड़ने वाले उच्छृंखल, कुमार्गगामी मनुष्य की गतिविधियों को रोकने के लिए, उन्हें दंड देने के लिए समाज और शासन की ओर से जो प्रतिरोधात्मक व्यवस्था हुई है, उससे सर्वथा बचे रहना संभव नहीं। धूर्तता के बल पर आज कितने ही अपराधी प्रवृत्ति के लोग सामाजिक भर्त्सना से और कानूनी दंड से बच निकलने में सफल होते रहते हैं पर यही चाल सदा सफल होती रहेगी, ऐसी बात नहीं है। असत्य का आवरण अंतत:फटता ही है और अनीति अपनाने वाले के सामने न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सही, पीछे उनकी निंदा होती ही है। जनमानस में व्याप्त घृणा का सूक्ष्म प्रभाव उस मनुष्य पर अदृश्य रूप से पड़ता है जिससे अहितकर परिणाम ही सामने आते हैं। राजदंड से बचे रहने के लिए ऐसे लोग रिश्वत में बहुत खरच करते हैं, निरंतर डरे और दबे रहते हैं, उनका कोई सच्चा मित्र नहीं रहता। जो लोग उनसे लाभ उठाते हैं, वे भीतर ही भीतर घृणा करते हैं और समय आने पर शत्रु बन जाते हैं। जिसका आत्मा धिक्कारेगी उसके लिए देर-सवेर में सभी कोई धिक्कारने वाले बन जाएँगे। ऐसी धिक्कार एकत्रित करके यदि मनुष्य जीवित रहा तो उसका जीवन न जीने के बराबर है।

नियंत्रण में रहना आवश्यक है। मनुष्य के लिए यही उचित है कि वह ईश्वरीय मर्यादाओं का पालन करे। अपने उत्तरदायित्वों को समझे और कर्त्तव्यों को निभाए। नीति, सदाचार और धर्म का पालन करते हुए सीमित लाभ में संतोष करना पड़ सकता है, गरीबी और सादगी का जीवन बिताना पड़ सकता है, पर उसमें चैन अधिक है। अनीति अपनाकर अधिक धन एकत्रित कर लेना संभव है, पर ऐसा धन अपने साथ इतने उपद्रव लेकर आता है कि उनसे निपटना भारी त्रासदायक सिद्ध होता है। दंभ और अहंकार का प्रदर्शन करके लोगों के ऊपर जो रोब जमाया जाता है उससे आतंक और कुतूहल होने पर श्रद्धा और प्रतिष्ठा का दर्शन भी दुर्लभ रहेगा। विलासिता-वासना का अनुपयुक्त भोग भोगने वाला अपना शारीरिक, मानसिक और सामाजिक संतुलन नष्ट करके खोखला ही बनता जाता है। परलोक और पुनर्जन्म को अंधकारमय बनाकर आत्मा को असंतुष्ट और परमात्मा को अप्रसन्न रखकर क्षणिक सुखों के लिए अनीति का मार्ग अपनाना किसी भी दृष्टि से दूरदर्शिता नहीं कहा जा सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुद्धिमत्ता इसी में है कि हम धर्म का, कर्त्तव्य पालन का महत्त्व समझें, सदाचार की मर्यादाओं का उल्लंघन न करें। स्वयं शांतिपूर्वक जिएँ और दूसरों को सुखपूर्वक जीने दें। यह सब नियंत्रण की नीति को अपनाने से ही संभव हो सकता है। कर्त्तव्य और धर्म का अंकुश परमात्मा ने हमारे ऊपर इसलिए रखा है कि सन्मार्ग से भटकें नहीं। इन नियंत्रणों को तोड़ने की चेष्टा करना अपने और दूसरों के लिए महती विपत्तियों को आमंत्रित करने की मूर्खता करना ही गिना जाएगा।

अनुशासन में रहा कीजिए

जीवन की समस्त गतिविधियों को नियंत्रित और व्यवस्थित रखना, उन्हें मानवीय आदर्शों को परिधि में केंद्रित रखना अनुशासन कहलाता है। अनुशासन जीवन जीने का एक निश्चित और नियमित तरीका है, जिसमें मनुष्य का रहन-सहन, खान-पान, चाल-ढाल, बात-चीत करना, काम करना सभी व्यवस्थित और सुंदरतापूर्ण होते हैं। अनुशासन जीवन जीने की एक कलापूर्ण पद्धति है जिससे जीवन के नक्शे में प्रत्येक पहलू, रंग-रूप यथास्थान चित्रित किए जाते हैं और मानवीय गुण, आदर्शों का सुंदर रंग भरा जाता है, जिससे अलौकिकता छिटकने लगती है।

सभी प्रकार की उन्नति, सफलता, विकास, प्रगति के लिए अनुशासित जीवन बिताने की आवश्यकता है। अनुशासनहीनता से असफलता के सिवा कुछ भी नहीं मिलता। अनुशासन मानव स्वभाव की एक आवश्यक इकाई के रूप में हर समय, हर परिस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। अनुशासन का मनुष्य के आंतरिक एवं बाह्य जीवन से घनिष्ठ संबंध है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुशासनहीनता से मनुष्य के आंतरिक और उसके फलस्वरूप बाह्य जीवन में अव्यवस्था फैल जाती है और इस अव्यवस्था से मनुष्य की शक्तियाँ परस्पर लड़ बैठती हैं, आपस में टकराने लगती हैं। सड़क पर चलने वाले ताँगे, मोटर, साइकिलें, रिक्शे, स्कूटर, गाड़ी आदि सभी अव्यवस्थित और बिना कानून-कायदे के चलने लगें तो परस्पर टकराव और दुर्घटनाएँ ही होंगी। इसी तरह जीवन के असंख्य सूक्ष्म पहलुओं में अव्यवस्था होने पर वे आपस में टकराएँगे और इससे मनुष्य के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पराजय का ही सामना करना पड़ेगा, जिससे अशांति, बेचैनी ही बढ़ेगी। शांति, प्रसन्नता, संतोष उसी स्थिति में मिलते हैं जब मनुष्य अपने लक्ष्य की ओर प्रगति करता रहे। उसकी विकास-यात्रा जारी रहे। जीवन के सभी पहलुओं का स्वस्थ विकास होता रहे। किंतु यह सब अनुशासनबद्ध जीवन में ही संभव है। अनुशासन से कार्यक्रम में व्यवस्था और गति पैदा होती रहती है जिससे प्रगति होती है। मनुष्य की मानसिक शक्तियाँ परस्पर न टकराकर संगठित होकर पुरोगामी बनती हैं जिससे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य आगे बढ़कर सफलता का वरण करता है।

इच्छाशक्ति की प्रबलता और मानसिक स्थिति की दृढ़ता, जिसके ऊपर मानव जीवन की प्रगति निर्भर करती है; मनुष्य के जीवन में व्यवहृत अनुशासन से ही प्राप्त होती है। अपने निर्दिष्ट लक्ष्य और निश्चित सिद्धांतों को जीवन में उतारने के लिए अनुशासनबद्ध सक्रियता की आवश्यकता है। इसी से मन प्रबल और इच्छाशक्ति दृढ़ होती है। अनुशासन के मार्ग पर चलकर मनुष्य को तप-त्याग करना पड़ता है, कष्ट उठाने पड़ते हैं। अनुशासनबद्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिपाही दुर्गम पहाड़ों में, हिम प्रदेशों में अपने कर्त्तव्य पर डटा रहता है तो रणभूमि में मौत का सामना करता है और काल से भी लड़ता है। फिर जीवन की सामान्य सी कठिनाई का कोई महत्त्व नहीं रहता।

अनुशासनबद्ध जीवन जीने वाला व्यक्ति सदैव प्रसन्नचित और आनंदमय स्थिति में रहता है। उसकी उपस्थिति मात्र से वातावरण में प्रसन्नता की लहर बह उठती है। अच्छाइयों का संचार होता है। भले काम उसके द्वारा स्वत: ही होने लगते हैं। जिस देश अथवा समाज में इस तरह के अनुशासित व्यक्ति जितने अधिक होंगे वह देश उतना ही ऊँचा उठ सकेगा। "अनुशासनबद्ध सौ सैनिकों की शक्ति अनुशासनहीन हजार सैनिकों से कहीं अधिक होती है।"

अनुशासन दो प्रकार का होता है—एक आंतरिक, दूसरा बाह्य। आंतरिक अनुशासन को मनुष्य स्वयं समझता है, महसूस करता है जबकि बाह्य अनुशासन दूसरों द्वारा लागू किया जाता है। यदि मनुष्य पूर्णतया आंतरिक अनुशासन का अवलंब लिए रहे तो उसे फिर बाह्य अनुशासन की आवश्यकता नहीं होती। एक बालक को आंतरिक अनुशासन का बोध नहीं रहता। इसीलिए माँ, बाप, अध्यापक आदि उसे अनुशासन सिखाते हैं और अभ्यास से बच्चा आंतरिक अनुशासन की भूमिका में पहुँचकर आगे स्वयं ही अनुशासित होने लगता है ठीक उसी तरह जैसे कोई प्रौढ़ें। वस्तुत: बाह्य अनुशासन तो आंतरिक अनुशासन का प्रारंभिक शिक्षण मात्र है। आंतरिक अनुशासन में मनुष्य स्वयं ही अपनी प्रौढ़ता के साथ अपने आप को सुधारता है, अपनी भूलों पर विचार करके उन्हें दुरुस्त करता है। जब प्रौढ़ होकर भी कई व्यक्ति आंतरिक अनुशासन का आचरण नहीं करते तो उनको समाज, राजनीति, प्रकृति आदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के माध्यम से शक्ति-बल द्वारा मजबूर किया जाता है। अनुशासनहीन व्यक्ति का संसार में कोई स्थान नहीं। यहाँ की सूक्ष्म तथा स्थूल शक्तियाँ उसे मजबूर कर देती हैं अनुशासित जीवन बिताने के लिए, अन्यथा उसका अस्तित्व ही नष्ट कर देती हैं।

जब कोई मनुष्य बुरा काम करता है तो उसे समाज की निगाह से बचाता है। इसका कारण यह है कि मनुष्य अपने निम्नतम स्तर की दूषित प्रकृतियों को समाज के प्रतिकूल समझता है। मनुष्य का उच्चतम स्वत्व, आदर्श, अच्छाइयाँ, सद्गुण, सत्प्रवृत्तियाँ ही समाज का रूप हैं। श्रेष्ठ पुरुषों के आचार-विचारों को आधार बनाकर ही समाज के स्वरूप का निर्धारण होता है। किसी चोर, लुटेरे, डाकू, गुंडे के आधार पर समाज का निर्माण होते कभी नहीं देखा गया। महापुरुषों का जीवन आंतरिक अनुशासन की साधना का उत्कृष्ट रूप होता है। अतः उनका अनुसरण कर मानव समाज भी जीवन में अनुशासन को अंगीकार करता है। इस तरह महापुरुषों द्वारा निर्धारित मार्ग, उनके द्वारा परिवर्तित और प्रयोग में लाई गई अनुशासन-व्यवस्था को मानव समाज सदा से अपनाता आ रहा है। अनेकों महापुरुषों द्वारा संशोधित अनुशासन की व्यवस्था ही सामाजिक अनुशासन है। वही उच्च आंतरिक अनुशासन का स्वरूप है जिसे महापुरुषों ने अपनाया है। यदि इस सामाजिक अनुशासन का संबंध आंतरिक अनुशासन से न रहेगा तो यह मनुष्य के लिए बंधनकारक और दुःखद बन जाएगा। सामाजिक अनुशासन के नियम मनुष्य द्वारा अपने लिए बनाए गए नियम ही हैं। किंतु मनुष्य, नियमों के लिए बनाई गई निर्जीव मशीन नहीं है। कोई भी नियम मनुष्य के विकास में योग दे तभी तक नियम है अन्यथा वह बंधन ही होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्ययन, व्यापार, विवाह, धर्म, पेशा, समाज में दूसरों के साथ व्यवहार, परिवार, संस्थाएँ आदि पहलुओं के आधार पर सामाजिक अनुशासन का ढाँचा खड़ा होता है। सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य को इन विभिन्न पहलुओं पर आधारित सामाजिक अनुशासन, नियम, व्यवस्था आदि को मानना आवश्यक होता है।

राजनीति का क्षेत्र, सामाजिक परिस्थितियों का विशेष रूप है, जो समय-समय पर बदलता रहता है। राजनीति मनुष्य की सुरक्षा और भले का ध्यान रखकर उसे अनुशासन और मानवीय नियमों में चलने की जबरदस्ती आदत पैदा करने का आधार है। कोई व्यक्ति यदि आंतरिक अथवा बाह्य प्रेरणा पाकर भी अनुशासनबद्ध जीवन न बिताए तो उसके लिए राजनीति एक सुव्यवस्थित, समर्थ और वैज्ञानिक सामाजिक व्यवस्था है, जो मनुष्य को उचित दंड देकर अनुशासन का पाठ पढ़ाती है। विभिन्न अदालतें, कचहरी, थाने, पुलिस, फौज, प्रशासन सब मनुष्य को अनुशासन सिखाने के साधन हैं। इनके माध्यम से चोर-डाकुओं को सजा दी जाती है। हत्यारों को फाँसी, मृत्युदंड आदि देकर भयभीत किया जाता है। अन्य अपराधों के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की सजाएँ राजनीति देती है और इस तरह समाज में अनुशासन पैदा करने के लिए राजनीति एक समर्थ व्यवस्था है।

किंतु राजनीतिक व्यवस्था की सफलता का आधार राज्याधिकारी, कर्मचारी, नौकरों पर है। यदि ये सब स्वयं ही अनुशासनहीन एवं भ्रष्ट होंगे तो अतीत में दमन की गई अनुशासनहीनता, अमानवीय प्रवृत्तियाँ बड़े प्रबल रूप में बढ़ जाती हैं। सारा समाज अव्यवस्थित, अनुशासनहीन एवं विषाक्त बन जाता है। शासनतंत्र के ढीले होने के साथ ही उसके खोखलेपन से सारी सामाजिक व्यवस्था का भवन ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तहस-नहस और अव्यवस्थित हो जाता है। समाज पतनोन्मुख हो जाता है। इसलिए जिन लोगों के हाथ में शासनतंत्र है उनका अधिक अनुशासित होना आवश्यक है। ये अपने चरित्र और व्यवहार से यदि अनुशासनहीनता का परिचय देंगे, अनीति बरतेंगे तो देखा-देखी सारे समाज में भी अगणित दुष्प्रवृत्तियाँ और उच्छृंखलताएँ बढ़ने लगेंगी।

समस्त संसार को नियम-व्यवस्था और अनुशासन में रखने की सर्वोपरि शक्ति-प्रकृति है। मनुष्य अपनी चालाकी, बुद्धि, चातुर्य से राजनीति या समाज की व्यवस्था को धोखा दे सकता है किंतु प्रकृति की व्यवस्था को धोखा नहीं दिया जा सकता। वहाँ छुटकारे का कोई मार्ग नहीं है। भोजन में अनियमितता बरतने वाले का पेट खराब हो जाता है। इसी तरह की अनियमितताओं से मनुष्य को कई कष्टसाध्य रोगों का सामना करना पड़ता है। काम-सेवन की मर्यादा का उल्लंघन करने वाले, वासना-पूर्ति के लिए ही जीने वाले व्यक्ति प्रकृति के कोपभाजन बनते हैं और अनेक रोगों के शिकार बन जाते हैं। इसी तरह दूसरों का दमन-शोषण करने वाले, अत्याचार, दुराचार को सदा खेल समझने वालों को भी एक न एक दिन जीवन में वह दिन देखना पड़ता है जब वे दु:खों के अथाह सागर में डूब जाते हैं, उनके बार-बार पुकारने पर, याचना करने पर भी कोई उनकी ओर देखता नहीं, उन्हें छटपटाकर ही जीवन बिताना पड़ता है।

प्रकृति प्रारंभ में जहाँ तक बनता है दोषी को सुधरने के लिए कुछ अवकाश अवश्य देती है। इस अवकाश को अविवेकी लोग अनीति की ही विजय का प्रमाण समझकर और अंधे हो बैठते हैं। साथ ही कई अधीर लोग अपने सत्पथ को भी छोड़ बैठते हैं। किंतु यह ध्रुव सत्य है कि प्रकृति के नियम में देर हो सकती है, अंधेर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं। बुराई, अनियमितता, अनुशासनहीनता का परिणाम अंततः बुराई में ही मिलता है। प्रकृति के सर्वव्यापी विधान से कोई बच नहीं सकता।

सभी प्रकार की बाह्य व्यवस्था नियंत्रण आदि स्थायी नहीं होते। दंड चाहे वह राजनीतिक, सामाजिक या प्राकृतिक ही क्यों न हो, कई मनुष्य इन सबको जानते हुए भी अपराधवृत्ति, अनुशासनहीनता नहीं छोड़ते। चोर, बदमाश, स्वेच्छाचारी व्यक्ति कई बार सामाजिक या प्राकृतिक दंड पाकर भी बुराई के मार्ग को नहीं छोड़ते। 'जब तक जिओ, खाओ-पिओ, मौज उड़ाओ' की नीति तो प्रकृति के दंड को भी महत्त्व नहीं देती। सुधार का मूल आधार मनुष्य की अनुशासनहीनता की विभिन्न वृत्तियों को आंतरिक संवेदनों से मिलने वाली शक्ति, उत्तेजना के बंद होने से है और इसका रास्ता आत्मनियंत्रण, आत्मानुशासन, आत्मशोधन में ही है।

आंतरिक जीवन में काम कर रहे सूक्ष्म भाव, विचार, वृत्तियों का शोधन, उनमें संतुलन कायम करना, अनुशासन का मूल आधार है। कई अवसरों पर मनुष्य नहीं चाहता कि वह सामाजिक अनुशासन भंग करे, निम्न वृत्तियों को अपनावे, वह नहीं चाहता कि किसी से लड़े, किंतु इस तरह की परिस्थितियाँ आते ही बेकाबू होकर उनमें उलझ जाता है। अतः जीवन में पूर्णरूपेण अनुशासन कायम करने के लिए आंतरिक जीवन में सुधार और अनुशासन कायम करना वांछनीय है। मनुष्य को अनुशासन सिखाने के बाह्य उपाय इस संबंध में सहयोग अवश्य देते हैं किंतु समस्या का पूर्ण समाधान नहीं कर सकते। आत्मानुशासन ही अंतर-बाह्य जीवन में अनुशासन स्थापित करने का एकमात्र मार्ग है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नैतिक मर्यादाओं का उल्लंघन न करें

मनुष्य की नैतिक सीमाएँ ही उसकी सफलता की सीमा है। यह इतना स्पष्ट सत्य है कि किसी व्यक्ति के नैतिक स्तर की जानकारी करके उसकी सफलता या असफलता का सही-सही परिणाम उसी तरह बताया जा सकता है जैसे गणित के सिद्धांतों के आधार पर किसी सवाल का उत्तर।

जिस तरह आकाश में फेंकी गई वस्तु का जमीन पर लौट आना सत्य है, उसी तरह अच्छा या बुरा काम भी लौटकर कर्त्ता पर ही आता है। प्रत्येक अनैतिक कार्य का परिणाम पराजय, असफलता, लक्ष्य से दूर हट जाना ही होता है। इसके विपरीत प्रत्येक नैतिक कार्य समृद्धि, सफलता और लक्ष्यप्राप्ति के सुंदर भवन का निर्माण करता है। किसी भी व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र का उत्थान उनकी नैतिक शक्ति और ज्ञान के विकास से ही होता है। इसके विपरीत नैतिक पतन ही पराभव का तथा पतन का मुख्य कारण है। अनैतिकता ही विनाश का दूसरा नाम है। नैतिकता सर्वत्र निर्मात्री-धात्री का काम करती है।

कोई भी बुरा काम करने पर मनुष्य का हृदय धक्-धक् करने लगता है। रक्त-संचार बढ़ जाता है। उसके पाँव लड़खड़ाने लगते हैं। शरीर में पसीना आने लगता है। ऐसा लगता है मानो कोई रोक रहा है। कोई भी बुरा काम करने पर आत्म-भर्त्सना होने लगती है। मनुष्य का मन आत्म-ग्लानि, पश्चात्ताप में डूब जाता है। यह सब नैतिक भाव के कारण ही होता है। जो उसके अंत:क्षेत्र में स्थित है। यह नैतिकता का भाव मनुष्य के बाह्य मन की वस्तु नहीं। नैतिकता की आवाज को तर्क, बुद्धि, चातुर्य शांत नहीं कर पाते।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नैतिकता ही चेतना का अंग है, जो किसी कृत्रिम प्रयत्न का परिणाम नहीं वरन जीवात्मा के एक लंबे समय के संस्कार, अभ्यास और सृष्टि में काम कर रहे दैवी विधान का व्यापक नियम है।

नैतिकता की अवहेलना करने पर सामाजिक अथवा राजनैतिक न्याय व्यवस्था के अनुसार मनुष्य को विभिन्न रूपों में दंड प्राप्त होता ही है। सरकार और समाज के दंड से मनुष्य किसी प्रकार बच सकता है, किंतु नियति के विधान से नहीं बच सकता। जिसका निर्णायक कहीं बाहर नहीं, मनुष्य के स्वयं के अंदर ही विद्यमान होता है, उसके चारों ओर भी, सर्वत्र ही। इसके अनुसार मनुष्य कई शारीरिक और मानसिक कष्टों को सहन करता है। आंतरिक अथवा बाह्य परिस्थितियों की उलझनों, विपरीतताओं में जो क्लेश, कष्ट, दुःखद अनुभूतियाँ होती हैं; वे उक्त दोनों प्रकार के बाह्य दंडों से भी अधिक कष्टकारक हैं।

नैतिक भाव, अंतरात्मा की आवाज के विरुद्ध आचरण करने पर मनुष्य की आत्म-भर्त्सना होने लगती है, जिससे मानसिक शक्तियाँ, इच्छाशक्ति निर्बल होने लगती है और मनुष्य दीन बन जाता है। आंतरिक जीवन की ही छाया मनुष्य के बाह्य जीवन पर पड़ती है। इस तरह अंतर-बाह्य सभी प्रकार से मनुष्य दीन-हीन बन जाता है।

मनुष्य अपनी चालाकी, शब्द चातुर्य एवं विविध प्रयत्नों से अपने अनैतिक कार्यों को छिपाने का असफल प्रयास करता है। बाह्य जगत में वह सफल भी हो सकता है किंतु नियति को धोखा नहीं दे सकता। कई बार मनुष्य अपनी धर्मबुद्धि, नैतिक आवाज को दबाने, पाप को भुलाने के लिए मनचाहे तर्क और विचारों का अवलंबन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लेता है और अपने आचरणों के औचित्य को सिद्ध कर मन में संतुष्ट होने का प्रयत्न करता है। किंतु नियति का नियम दूसरे ही ढंग से पाप के दंड और उसके प्रकाशित होने का मार्ग बना देता है।

सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर दुःख, शोक, हानि, पीड़ा, क्लेश की आड़ में मनुष्य के अनैतिक कार्यों का परिणाम मिलता है। दूसरों की नींद हराम करने वाले चैन से सो नहीं सकते। चोर, लुटेरे, गुंडे, तस्करों को घर बसाकर सुख-शांति का जीवन बिताते नहीं देखा जाता। आज नहीं तो कल, देर-सवेर में अनैतिकता का परिणाम दुःखदायी और विनाशकारी ही होता है।

यदि मनुष्य नैतिक सिद्धांतों के अनुसार कार्य करता रहे तो जीवन में आने वाली अनिश्चित घटनाओं, तूफान, उलझनपूर्ण समस्याओं में भी संपूर्ण सुरक्षा, शांति, विश्वास के साथ ही जीवन में समृद्धि, विकास प्राप्त कर सकता है।

राष्ट्रीय उन्नति का प्रधान स्तंभ—नागरिकता

पश्चिम के देशों ने एशिया और अफ्रीका के अनेक देशों के निवासियों के साथ जैसा क्रूरतापूर्ण, अमानवीय और धूर्तता का व्यवहार किया है वह सर्वविदित है। वहाँ की बहुसंख्यक चरित्रहीन नारियों की विलास-लीलाएँ और तलाक-कांड भी प्रसिद्ध ही हैं। इस दृष्टि से अपने देश की हालत को कुछ गनीमत समझ सकते हैं। पर जब यहाँ के निवासियों के व्यक्तिगत जीवन पर विचार करते हैं और समाज के प्रति उनके कर्त्तव्य संबंधी अज्ञान तथा उपेक्षा को देखते हैं तो बड़ी निराशा होती है। वे लोक, परलोक, मुक्ति, आत्मा की अमरता की बातें तो कर सकते हैं, पर अपने मोहल्ले अथवा गली की सफाई की समस्या की तरफ कभी उनका ध्यान नहीं जाता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्तिगत रूप से वे पूजा, पाठ, भजन, देव-दर्शन आदि को नियमित रूप से करते हैं, पर किसी सार्वजनिक समारोह में ठीक समय तक पहुँचकर भाग ले सकना उनके लिए बड़ा कठिन होता है। इसी प्रकार की अनेक साधारण बातों में अन्य व्यक्तियों की सुविधा और असुविधा का ध्यान न रखने का नतीजा यह होता है कि हम सभी को समय-समय पर ऐसी कठिनाइयों और आपत्तियों का सामना करते रहना पड़ता है जो थोड़ी सी सावधानी रखने से ही दूर की जा सकती है। जब इस प्रकार की कठिनाई स्वयं हमको उठानी पड़ती है तो उसके लिए दूसरों को बुरा-भला कहते हैं और उपदेश भी देने लगते हैं, पर व्यवहार में उस प्रकार का कार्य स्वयं करने में हम किसी प्रकार का संकोच नहीं करते। इस संबंध में एक विद्वान लेखक के निम्न विचार हम सबके लिए ध्यान देने योग्य हैं—

"क्या हमारे पाठकों ने केले और नारंगी के छिलके चारों तरफ पड़े हुए नहीं देखे हैं! क्या ऐसा भी कभी नहीं हुआ कि जरूरी काम से जब वे सड़क पर चले जा रहे हों या जल्दी में रेल पर चढ़ने के लिए प्लेटफार्म पर दौड़े तो इन पर फिसलकर गिर पड़े हों! अगर उनका ऐसा अनुभव है तो क्या उन्होंने स्वयं छिलके ऐसी जगहों पर नहीं फेंके हैं, जहाँ फेंके नहीं जाने चाहिए थे! क्या उन्होंने सदा इस बात का विचार रखा है कि घरों में इन्हें अलग टोकरी में रखें, सड़कों पर उन्हें कूड़े के डोलों में डालें और रेल में खिड़की के बाहर फेंके! क्या ऐसा कभी नहीं हुआ है कि जब रेल पर चढ़े हों तो वहाँ पर व्यर्थ का कूड़ा-करकट पाकर उन्हें बड़ा बुरा लगा हो और उन्होंने उन मुसाफिरों को मन ही मन खूब कोसा हो जो उस डिब्बे में पहले चढ़े थे और जिन चीजों को बाहर फेंक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देना चाहिए था, उन्हें डिब्बे में ही छोड़कर चल दिए थे! पर क्या उन्होंने खुद इस बात का विचार रखा है कि इस प्रकार के कूड़े को कम करें या उसकी वृद्धि न करें! आप यह सदा स्मरण रखें कि सदा अपने स्थान पर हर एक चीज ठीक है और गलत स्थान पर वही गंदगी है। हमें वही मिलेगा जिसके हम योग्य हैं और सार्वजनिक अधिकारियों की तरह से भी सफाई आदि का उन्हीं स्थानों पर अधिक प्रबंध रखा जाएगा, जहाँ के रहने वाले उस पर जोर देते हैं और स्वयं भी साफ रहते हैं। जिन्हें गंदगी, गंदगी मालूम नहीं होती, जो खुद साफ नहीं रहते, उनके यहाँ कोई सफाई नहीं करता।"

इस प्रकार की लापरवाही और दूसरों को सुविधा के प्रति उपेक्षा की भावना रखने का नतीजा यह होता है कि हम जल्दी ही किसी बात पर विश्वास नहीं कर पाते और इस कारण हमको समय-समय पर बहुत कुछ तकलीफ या हानि भी उठानी पड़ती है। रास्ते में चलते हुए तरह-तरह की गंदी चीजों के पड़े रहने अथवा रास्ते के बीच में खड़े होकर बात-चीत या हँसी-मजाक करने वाले लोगों से जब हमको रुकना पड़ता है तो क्या वह हमको बुरा नहीं जान पड़ता? अनेक लोग तो छिपे तौर पर घरों में निकलने वाले बेकार ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि के ढेर बीच सड़क पर लगा देते हैं कि जिससे अनजान व्यक्ति को चोट खा जाने या किसी गाड़ी या सवारी के गिर जाने का पूरा अंदेशा रहता है। कितने ही लोग ऊपर की छतों की मोरी से बीच बाजार में गंदा पानी छोड़ देते हैं, जिनके छींटे राह चलतों पर पड़ते हैं और कभी-कभी जिनके ऊपर बड़ी लड़ाई भी हो जाती है। इस प्रकार के कामों को कोई अच्छा नहीं कहता और समय-समय पर उन सभी को उनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण तकलीफ उठानी पड़ती है पर नागरिकता की शिक्षा के अभाव से प्रायः सभी लोग उनको करते रहते हैं।

नागरिकता की शिक्षा के अभाव का एक परिणाम यह हुआ कि हम लोगों के पारिवारिक संबंधों में विश्वास का अभाव हो गया है जिसके कारण सबको अनिश्चित अवस्था में रहकर बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है। जिस प्रकार हम सार्वजनिक जीवन में लापरवाही और दूसरों के प्रति उपेक्षा का व्यवहार करते हैं, वही हमारे व्यक्तिगत संबंधों पर प्रभाव डालता है और हम अपने लिए जिन बातों की इच्छा रखते हैं, दूसरों के साथ प्रायः उनके विपरीत भी व्यवहार करते हैं।

जब हम मोची, दरजी, धोबी आदि को कोई काम देते हैं तो हमें यह विश्वास नहीं रहता कि वह समय से काम कर देगा और न उसे विश्वास रहता है कि हम समय पर उसे दाम दे देंगे। इसी कारण परस्पर तकाजे पर तकाजा करते रहना पड़ता है। ऐसी दशा में समाज कैसे ठीक प्रकार से चल सकता है! हालत यहाँ तक पहुँचती है कि यदि आप किसी को भोजन का निमंत्रण दें और उसे उन्होंने स्वीकार भी कर लिया हो, तो न आपको यह विश्वास रहता है कि वे समय पर आ जाएँगे और न उन्हें यह विश्वास रहता है कि यदि जाएँगे तो समय पर भोजन मिल ही जाएगा। यदि कोई हमसे कोई चीज माँगकर ले जाए तो इस बात का भरोसा नहीं रहता कि वह उसको नियत समय पर और वैसी ही अच्छी हालत में लौटा देगा जैसी हालत में दी थी।

नागरिक गुणों का विकास का अर्थ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी जैसे व्यक्तित्व को मर्यादित बनाने वाले सद्गुण को प्रश्रय देना है। इनका उल्लंघन न करके ही राष्ट्रीय उन्नति के शिखर पर पहुँचा जा सकता है। ❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ० प्र०)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org